इकाई 3 अमरीकी क्रांति

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य
3.1 प्रस्तावना
3.2 एक नया समाज होने की विशिष्टता
3.3 क्रांति की ओर
  3.3.1 आर्थिक समस्याएं : मंदी
  3.3.2 विचारधारा तथा वर्ग
  3.3.3 क्रांति तथा इसके परिणाम
3.4 संविधान का निर्माण
3.5 दासता पर आधारित लोकतंत्र
3.6 जन राजनीति तथा जैक्सनी लोकतंत्र का विकास
3.7 सारांश
3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

अमरीकी क्रांति ने अमरीकी उपनिवेशों को ब्रिटिश साम्राज्य के कब्जे से मुक्त कराया। उसका अमरीका के भावी विकास में न केवल आर्थिक अपितु सामाजिक-राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यधिक महत्व रहा। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- क्रांतिपूर्व के अमरीकी समाज को समझ पाएंगे;
- अमरीकी क्रांति की जमीन तैयार करने वाली परिस्थितियों की व्याख्या कर पाएंगे;
- अमरीकी संविधान में किन बातों पर मुख्य रूप से जोर रहा, इसका विश्लेषण कर पाएंगे; और
- अमरीका में दासता की संस्था तथा लोकतांत्रिक राजनीति के विकास के बारे में जान पाएंगे।

3.1 प्रस्तावना

अठारहवीं शताब्दी के अंतिम दौर में होने वाली अमरीकी क्रांति को एक ऐसा स्वतंत्रता संग्राम माना गया है जिसमें 1789 की फ्रांसीसी क्रांति जैसी महान क्रांतियों के सामाजिक उग्र सुधारवाद वाले तत्व का अभाव था। फिर भी, राजतंत्र को नष्ट करके तथा एक गणतंत्र का निर्माण करके अमरीकियों ने न केवल अपनी सरकार को अपितु अपने समाज को भी बदल डाला। अमरीकी क्रांति ने अमरीकी समाज को एक लोकतांत्रिक तथा पूंजीवादी समाज का रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, वैसे तो अठारहवीं शताब्दी के अंतिम दौर से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ तक की अवधि में 'लोकतांत्रिक क्रांतियां' पश्चिमी यूरोप में सामाजिक बदलाव ला रही थीं, फिर भी यूरोप की तुलना में अमरीका की क्रांति ने अमरीकी राजनीति तथा समाज को लोकतांत्रिक रूप देने में अपेक्षाकृत अधिक ठोस रूप में मदद की। आगे हम आपको क्रांति पूर्व अमरीका की विशेषताओं के बारे में जानकारी देंगे और यह भी बताएंगे कि क्रांति कैसे हुई। हमने नए संविधान के निर्माण तथा अमरीकी लोकतंत्र के केंद्रीय तत्व के रूप में दासता की संस्था की भी व्याख्या की है। अंत में, आपको जन राजनीति तथा जैक्सनी लोकतंत्र की जानकारी दी जाएगी।

NOVA SCOTIA
BAY OF FUNDAY
QUEBEC
MONTREAL
LAKE SUPERIOR
OTTAWA
BOSTON
MASSA CHUSETTS
LAKE ONTARIO
LAKE HURON
LAKE MICHIGAN
NEWYORK
ATLANTIC
HURON
NEW YORK
PANNSYLVANIA
LAKE ERIE
PENNA
PHILADELPHIA
BALTIMORE
VIRGINIA
RICHMOND
SHAWNEE
MIAMI
JAMESTOWN
OCEAN
BLUE RIDGE MOUNTAIN
NORTH CAROLINA
WILMINGTON
SOUTH CAROLINA
CHARLESTON
BRITISH SETTLEMENT IN NORTH AMERICA
SAVANNAH
GEORGIA
WEST FLORIDA
LOUSIANA
St. AUGUSTINE
ALABAMA
APALACHEE
EAST FLORIDA
NEW ORLEANS
GULF OF MAXICO

3.2 एक नया समाज होने की विशिष्टता

यूरोप में सोलहवीं शताब्दी के दौरान सामंतवाद के पतन के यूरोपीय समाज के आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में दूरगामी परिणाम हुए। इस दौर के पुनर्जागरण एवं सुधारवादी आंदोलनों ने व्यक्तिगत स्वाधीनता की भावना का विकास करने में अपना अंशदान किया तथा लोगों को और साहसिक बना दिया। इस दौर के राजनीतिक तथा आर्थिक घटनाक्रमों ने भी यूरोप के लोगों को नए देशों को खोजने तथा जीतने के लिए प्रेरित किया। संयुक्त राज्य अमरीका के पूर्वी समुद्रतट पर बसी अमरीकी बस्तियां नई दुनिया का भी हिस्सा थीं और पश्चिमी दुनिया का भी। नई दुनिया का हिस्सा होने के नाते इन अमरीकी उपनिवेशों में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति बन गई क्योंकि उपनिवेशक उत्तरी अमरीकी महाद्वीप में बहुतायत से पड़ी जमीन पर हर ओर अपने पाँव पसारने की स्थिति में थे। अमरीका की आबादी 1750 और 1770 के बीच दस लाख से बढ़ कर बीस लाख और 1790 तक चालीस लाख हों गई। ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, स्कॉटलैंड तथा आयरलैंड से आकर बसने वाले लोगों ने भी इन उपनिवेशों की आबादी में जबरदस्त वृद्धि की। जनसंख्या में हुई वृद्धि और पश्चिम की ओर हो रहे विस्तार ने मिल कर अमरीकी 'सीमांत' का तथा इस सीमांत में बस गए लोगों की लोकतांत्रिक भावना का निर्माण किया। उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान यह सीमांत लगातार पश्चिम की ओर बढ़ता रहा और इस प्रकार एक ऐसे समाज का निर्माण हुआ जो ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौर की अपेक्षा कहीं अधिक लोकतांत्रिक तथा अमरीकी था, जैसी कि इतिहासकार टर्नर ने उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में टिप्पणी की।

1740 के दशक में शुरू हुई एक आर्थिक क्रांति ने अमरीकी आयात-निर्यातों में जबरदस्त विस्तार की स्थिति ला दी। ब्रिटेन से होने वाले आयातों का मूल्य 1747 में जो दस लाख पौंड से भी कम था, वह 1772 में बढ़ कर 45 लाख पौंड के आसपास पहुंच गया। मुख्य रूप से आंतरिक व्यापार में होने वाले विस्तार तथा कागजी मुद्रा के इस्तेमाल के कारण चलने वाली आर्थिक बदलाव की प्रक्रिया ने 'मंझले स्तर' के लोगों को इस योग्य बना दिया कि वे पुराने समय से चले आ रहे संरक्षक आश्रित वाले संबंध को तोड़ सकें। महा जाग्रति (ग्रेट अवेकानिंग) के नाम से मशहूर धार्मिक पुनर्जागरण ने भी पुराने समय से चले आ रहे भद्रजनों तथा स्थापित एंग्लिकन पुरोहित वर्ग के दबदबे को कमजोर किया।

अमरीका में अठारहवीं शताब्दी के मध्य में गणतंत्रवादी (रिपब्लिकन) विचारों के विकास को एक ऐसी मजबूत लोकतांत्रिक परंपरा की विद्यमानता के साथ जोड़ कर देखा गया है जिसका आधार अमरीकी समाज़ के भीतर अटूट वर्ग सीमाओं तथा सामंतवाद की अनुपस्थिति रही। अठारहवीं शताब्दी के अमरीका में कुलीनतंत्रीय परिवार तथा महाजन वर्ग तो अवश्य थे, किंतु वरजीनिया तथा न्यू हैम्पशायर को छोड़ उनमें से कोई भी राज्य की राजनीति में प्रभुत्व नहीं रखता था। औपनिवेशिक अमरीका में समाज के उच्च वर्गों के पास ब्रिटेन की तुलना में कहीं कम आर्थिक तथा राजनीतिक शक्ति थी। दूसरी ओर, अधिसंख्य अमरीकी किसानों के पास उनकी अपनी भूमि थी, जबकि इसके विपरीत ब्रिटेन में सीमांत काश्तकारों तथा भूमिहीन खेतिहरों की संख्या ही अधिक थी। अमरीका में दो तिहाई गोरी औपनिवेशिक आबादी के पास अपनी जमीन थी, जबकि ब्रिटेन में केवल बीस प्रतिशत लोगों के पास ही भूमि थी। कुलीनतंत्र की अपेक्षाकृत कमजोर स्थिति, भूमिघर किसानों की एक बड़ी संख्या का होना, बड़ी संख्या में स्वदेशियों की अनुपस्थिति तथा पश्चिम की ओर पलायन करके भूमि हथियाने की संभावना ने अठारहवीं शताब्दी के अमरीका की राजनीति को एक मजबूत गणतांत्रिक रंग दिया।

हालांकि अमरीकी समाज अन्य पश्चिमी समाजों की तुलना में अधिक समतावादी था, फिर भी वहां कुलीनतंत्र भी था, सम्राटों की परंपरा भी थी और अभिजात्य तथा आम जन के बीच पितृसत्तात्मक निर्भरता पर आधारित संबंध भी थे। अमरीकी लोग अनेक प्रकार की वैधानिक निर्भरता अथवा पराधीनता के प्रति भी जागरूक थे। विशेषज्ञों के अनुसार एक समय ऐसा भी था जब कम से कम पचास प्रतिशत औपनिवेशिक समाज वैधानिक रूप से पराधीन था। उन पांच लाख अफ्रो अमरीकी लोगों के अलावा, जो पुश्तैनी गुलाम थे, ऐसे हजारों गोरे अप्रावासी भी थे जो अनुबंधबद्ध नौकरों अथवा प्रशिक्षुओं के रूप में आए। इन्हें कई वर्ष अथवा कहीं कहीं तो कई दशक के लिखित अनुबंध पर यहां लाया गया। ऐसा अनुमान है कि उपनिवेशों में आने वाले तमाम आप्रवासियों में से आधे से लेकर दो तिहाई तक ऐसे अनुबंधबद्ध नौकर थे जो सात से लेकर चौदह वर्ष की अवधि तथा अपने मालिकों के प्रति लिखित रूप से अनुबंधित थे। अमरीका में मजदूरी की बहुत मांग थी, और क्योंकि अनुबंध पर नौकरों को बाहर से लाना महंगा पड़ता था इसलिए उनके कहीं आने जाने पर पाबंदी थी और उन पर नियंत्रण रखा जाता था कि वे कहीं भाग न जाएं। उपनिवेशों के बंधुआ मजदूर अपनी हैसियत के हिसाब से अंगरेजी नौकरों की अपेक्षा अमरीका के काले गुलामों के अधिक निकट थे, क्योंकि अंगरेजी नौकरों को तो काफी आजादी मिली हुई थी और उनका अनुबंध भी मात्र एक वर्ष का होता था। अनुबंधबद्ध नौकरों के इस्तेमाल ने अमरीकी

उपनिवेशकों को न केवल वैधानिक अधीनता से बनने वाली कठिनाइयों के प्रति अपितु शायद स्वाधीनता के महत्व के प्रति भी जागरूक बना दिया।

अठारहवीं शताब्दी के ज्ञानोदय (इनलाइटनमेंट) आंदोलन से उपजे विचारों ने पारंपरिक विश्वासों तथा सामाजिक संबंधों की अनेक प्रकार से जड़ें खोदी। ज्ञानोदय आंदोलन के विचारों को अपना कर अभिजात्य शासक वर्ग तथा सत्ताधारी लोगों ने शासक, न्यायकर्ता, मालिक तथा पिता के रूप में अपने ही अधिकारों को समाप्त कर लिया। पितृसत्ता के विरूद्ध एक क्रांति का जन्म गणतंत्रवादी विचारों के विकास के साथ साथ हुआ। अठारहवीं शताब्दी में व्यवसायीकरण के साथ ही स्थिति यह हो गई कि जो अनुबंध पहले के समय में पति तथा पत्नियों अथवा मालिक तथा प्रशिक्षुओं के बीच पितृसत्तात्मक संबंधों पर आधारित होते थे, उनका स्थान अब ऐसे अनुबंधों ने ले लिया जो सामाजिक संबंधों नहीं अपितु विशिष्ट लेन देन के प्रतीक दो समान पक्षों के बीच लाभदायक सौदेबाजी हो गई। मालिक मातहत के बीच सभी संबंधों को जब इस अनुबंध की दृष्टि से देखा जाने लगा तो सम्राट तथा उपनिवेशों के बीच संबंधों को देखने का अमरीकी नजरिया भी इससे प्रभावित हुए बिना न रह सका। सच तो यह है कि शाही संबंध का बखान करने के लिए पिता-संतान के जिस रूप का इस्तेमाल किया गया, उसका प्रभाव अमरीकी क्रांति से पूर्व टोरी तथा विग दोनों के लेखन पर पड़ा। आधुनिक वैधानिक अनुबंधन की भाषा का व्यापक इस्तेमाल होने लगा तो अमरीकी उपनिवेशकों के लिए मातृ देश तथा ब्रिटिश सम्राट के पितृसत्तात्मक अधिकार से नाता तोड़ना और भी आसान हो गया।

इसका ठीक ठाक कारण यह था कि अमरीकी उपनिवेशों के निवासियों को जिस स्तर की समानता तथा संपन्नता मिली हुई थी वह पश्चिमी देशों के लिए उस समय इतनी असाधारण बात थी कि अमरीकी लोग अपने अधिकारों तथा विशेषाधिकारों की रक्षा करने को अत्यधिक चिंतित थे। परिणामस्वरूप, अमरीकियों ने उनकी स्वतंत्रता तथा संपन्नता के प्रति खतरे को और भी बढ़ा चढ़ा कर रखा। इसके अतिरिक्त, व्यवसायीकरण, पितृसत्तात्मक संबंधों के पतन तथा लोक राजनीति के इस युग में आर्थिक तथा सामाजिक बदलावों ने लोगों की चिंताओं को और बढ़ा दिया। अभिजात्य वर्ग के कुछ लोगों ने जो तेजी से प्रगति की, ब्रिटिश शाही नीति में बदलाव के कारण उनकी वही प्रगति उनकी संपन्नता में गिरावट के प्रति चिंता का कारण बन गई। 1757-1763 के सात वर्षीय युद्ध के बाद ब्रिटिश नीति के कठोर होने के परिणामस्वरूप 1765 का स्टाम्प अधिनियम लागू किया गया, जिससे अमरीकियों की संपन्नता तथा स्वतंत्रता के प्रति खतरे के बारे में चिंता की स्थिति बनी। जैक ग्रीन के अनुसार, अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक जो औपनिवेशिक असेम्बलियां काफी मुखर होने लगी थीं, अब उन्होंने ऐसी संस्थाओं का रूप ले लिया था जिनके साथ खड़े होना शाही सत्ता तथा नीति के विरूद्ध संघर्ष करने के लिए जरूरी हो गया। ब्रिटिश साम्राज्य की हठधर्मिता के प्रति बढ़ते जनता के विरोध में, तानाशाही तथा भ्रष्टाचार के विरूद्ध चलने वाले संघर्ष ने बड़ी तेजी के साथ स्वाधीनता संग्राम का रूप ले लिया।

बोध प्रश्न 1

1) आपके विचार में कौन सी बात अमरीकी समाज को दूसरों से अलग करती है? 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....
....
....
....
....

2) अमरीका में लोकतांत्रिक भावना के विकास के क्या कारण थे? पांच वाक्यों में लिखिए।

....
....
....
....
....

3.3 क्रांति की ओर

ब्रिटिश सरकार का यह मानना था कि उपनिवेशों को अपने मातृ देशों के हितों को साधना चाहिए। ब्रिटेन ने औपनिवेशिक अमरीका में व्यापारिक नीतियों को अपनाया, जिन्हें मुख्य रूप से एक अनुकूल व्यापार संतुलन के रूप में ब्रिटिश आर्थिक हितों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाया गया था। 1651, 1660 तथा 1663 के विभिन्न जहाजरानी (नेविगेशन) अधिनियमों के माध्यम से यह सुनिश्चित कर लिया गया था कि व्यापार के लिए केवल ब्रिटेन या उसके उपनिवेशों के ही जहाजों का इस्तेमाल होगा, कि अधिकांश यूरोपीय माल को अमरीकी उपनिवेशों में प्रवेश करने से पहले ब्रिटेन से होकर गुजरना होगा और यह भी कि परिगणित (इन्यूमरेटिड) सामान के रूप में घोषित तंबाकू तथा चावल जैसे कुछ सामानों को केवल ब्रिटेन में ही जहाज में लादा जा सकेगा कि ब्रिटेन की आर्थिक आत्म निर्भरता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कुछ परिगणित सामानों के उत्पादन के लिए मुक्त हस्त से अनुदान दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त, अनेक अधिनियम लागू करके उपनिवेशों पर यह पाबंदी लगा दी गई कि वे निर्मित सामान का निर्यात नहीं कर पाएंगे। इसका प्रभाव 1699 में ऊन तथा ऊनी वस्त्रों पर, 1732 में हैट उद्योग पर और 1750 में लौह उत्पादों पर पड़ा।

ब्रिटेन की व्यापारिक नीतियां शोषणकारी थीं, किंतु समूचे बोझ को यदि प्रति व्यक्ति के हिसाब से देखा जाए तो यह इतना महत्वपूर्ण नहीं था। परिगणित सामानों के लिए विश्व बाजार में जो कीमतें निर्धारित थीं, उपनिवेशकों को ब्रिटेन उनसे कम ही देता था। ऐसा विशेषकर तंबाकू के मामले में था जिसे ब्रिटेन वापस यूरोप को निर्यात कर देता था। ब्रिटेन के रास्ते यूरोप से होने वाले आयात से आयतित सामानों की कीमत बढ़ जाती थी अथवा उपनिवेशकों को ब्रिटेन से अपेक्षाकृत महंगे उत्पाद खरीदने पड़ते थे। किंतु, अमरीकी निर्माण पर लगे प्रतिबंधों का कोई गंभीर हानिकारक परिणाम नहीं हुआ क्योंकि अमरीका अठारहवीं शताब्दी के दौरान कृषि प्रधान देश था।

सात वर्षीय युद्ध के बाद ब्रिटेन ने अमरीका की प्रतिरक्षा के बोझ को उपनिवेशकों के ऊपर डालने की कोशिश की क्योंकि ब्रिटेन में करों का बोझ बहुत अधिक माना जाता था। 1764 का चीनी अधिनियम तथा 1765 का स्टाम्प अधिनियम सम्राट जॉर्ज तृतीय के समर्थन में ब्रिटिश प्रधान मंत्री ग्रेनविल के प्रारंभिक उपाय थे। इनका उद्देश्य अपनिवेशों की प्रतिरक्षा के लिए संसाधन जुटाना था। हालांकि चीनी अधिनियम में 1733 के शीरा अधिनियम में प्रस्तावित शुल्कों (ड्यूटी) को आधा कर दिया गया था, फिर भी ब्रिटिश सरकार ने कानून को वास्तव में लागू करने के अपने संकल्प का संकेत दिया। स्टाम्प अधिनियम तो ठेकों, वसीयतों, अखबारों पर टैक्स था, वहीं 1767 के टाउनजेंड अधिनियमों ने कागज, कांच, सीसा और चाय पर शुल्क लगाानें का काम किया। इन अधिनियमों के लागू होने के बाद अमरीका में व्यापक स्तर पर ब्रिटिश सामानों का बहिष्कार हुआ, जिसके चलते 1766 में स्टाम्प अधिनियम को पूरी तौर पर तथा 1770 में टाउनजेंड अधिनियमों को आंशिक रूप में वापस ले लिया गया। इस व्यापक विरोध के कारण ब्रिटिश सरकार को अपने कदम वापस खींचने पड़े, किंतु 1773 का चाय अधिनियम ला कर उसने उपनिवेशों पर कर लगाने के अपने अधिकार के दावे को पेश करने की इच्छा भी व्यक्त की। ब्रिटेन के लगाए इन नए करों के बोझ ने ही उपनिवेशकों को विद्रोह के लिए नहीं उकसाया, किंतु विद्रोह का कारण यह भी रहा कि ये कर आर्थिक कठिनाइयों तथा मंदी के दौर में लगाए गए।

उपनिवेशकों ने ब्रिटेन को अनेक उत्पादन कर तथा शुल्क भी दिए और जहाजरानी अधिनियमों के चलते उन्हें लगभग दो प्रतिशत आय भी गंवानी पड़ी। यदि इन सब को जोड़ कर उन्हें 'कर' का नाम दे दिया जाए तो अमरीकी उपनिवेशकों का दिया हुआ प्रति व्यक्ति कर ब्रिटिश के दिए कर का लगभग एक तिहाई बनता था। और अधिक ब्रिटिश करों के भय तथा 1763 के पूर्व की व्यापारिक व्यवस्था के कुछ उपायों के प्रशासनिक स्तर पर लागू किए जाने के कारण ही उपनिवेशकों में प्रतिरोध की भावना भड़की। जिन पर बोझ आनुपातिक रूप में अधिक था, वहां प्रतिरोध विशेषकर हुआ।

3.3.1 आर्थिक समस्याएं : मंदी

अमरीकी क्रांति के आर्थिक कारण केवल व्यापारिकता के बोझ को लेकर नहीं, किंतु औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था

के उतार चढ़ावों से जुड़ा भाग्य लक्ष्मी की अनिश्चितताओं से भी संबंधित हैं। ब्रिटिश व्यापारियों ने 1745 से 1760 तक जो अमरीकी उपनिवेशों को ऋण का विस्तार किया उसके बाद 1760 के दशक में व्यापार के क्षेत्र में शक्ति परीक्षण हुआ। 1760 के बाद ब्रिटिश अर्थव्यवस्था ने धीमे विकास के दौर में प्रवेश किया और ऋण का प्रवाह पहले की अपेक्षा अंश मांत्र रह गया। इससे 1760 के दशक की मंदी की स्थिति और भी खराब हो गई और 1769 तथा 1771 के बीच वसूली भी शांत हो गई।

एम एगनल के अनुसार, "किंतु, सभी उपनिवेशों में, मंदी ने, विशेषकर दशक के उत्तरार्ध में और भी खराब होने की स्थिति में, विस्तारवादियों के सामने एक चुनौती रखी जो लगभग उतनी ही गंभीर थी जितनी ब्रिटिश उपायों के कारण खड़ी हुई चुनौती।" विस्तारवादी तो धनी व्यक्तियों का एक गुट था जिनका विश्वास "नई दुनिया की शक्ति तथा उसके भरपूर भविष्य" में था और जो दमनकारी ब्रिटिश प्रस्तावों के विरोध में थे। इन उच्च वर्गीय राष्ट्रभक्तों के विरोध में गैर विस्तारवादी खड़े थे। ये गैर विस्तारवादी भी धनी लोग थे, किंतु वे ब्रिटेन के बिना अमरीका के भविष्य के प्रति कम आश्वस्त थे, हालांकि वे उपनिवेशों के प्रति ब्रिटेन की अपेक्षाकृत नरम नीतियों के पक्ष में थे। एगनल का तर्क है कि हालांकि संपन्न विस्तारवादी अमरीका में एक "शक्तिशाली साम्राज्य" की रचना करने को उत्सुक थे, फिर भी यदि ब्रिटेन ने कुछ अधिक समझौतावादी रूख अपनाया होता तो वे सम्राट के विरूद्ध बगावत का झंडा नहीं उठाते।

एगनल 1760 के दशक के अंतिम वर्षों के जनता के विरोधों तथा लामबंदियों और 1770 के दशक के प्रारंभिक वर्षों अर्थात 1773 में चाय अधिनियम के विरूद्ध होने वाले आंदोलन से पहले के "शांत वर्षों" — के बीच एक अंतराल देखता है। विस्तारवादियों को "1760 के दशक में निम्न वर्ग की ज्यादतियों ने ठंडा" कर दिया था (और 1771 तथा 1773 के बीच ब्रिटेन के नरम पड़ने की आशाओं ने भी। 1773 में चाय अधिनियम के विरोधों के पहले "उच्च तथा निम्न वर्ग का गठबंधन सच में कहीं भी सुदृढ़ नहीं हुआ, और न ही राष्ट्रभक्ति की भावना फिर से उभरी।" 1774-1776 की अवधि के दौरान ही विस्तारवादियों को गैर विस्तारवादियों के प्रतिरोध पर काबू पाने में सफलता मिल पाई। गैर विस्तारवादी तो न्यूयॉर्क तथा पेनसलवेनिया के मध्यवर्ती उपनिवेशों में सर्वाधिक मजबूत थे। वरजीनया में निम्न वर्ग की कोई गंभीर चुनौती न होने के कारण गैर विस्तारवादी अधिक सहिष्णु थे और इसीलिए द्विपक्षीय सहयोग संभव हो गया। जनता के लामबंद होने का स्तर विशेषकर देहाती क्षेत्रों में पहले की किसी भी अवधि की तुलना में ऊंचा ही रहा। मैसाचूसिट्स, पेनसलवेन्या तथा वरजीनया के छोटे किसानों ने जहां राष्ट्रभक्तों का समर्थन किया, वहीं न्यूयार्क तथा दक्षिणी कैरलाइना के किसान राजभक्त हो गए। कुल मिला कर शहरों के निम्न वर्गों ने ब्रिटेन के विरूद्ध अमरीकी क्रांति का समर्थन किया।

3.3.2 विचारधारा तथा वर्ग

जोजेफ अर्न्स्ट ने अमरीकी क्रांति की आर्थिक तथा वैचारिक व्याख्याओं को जोड़ने का प्रयास किया है। उसने 1762 तथा 1772 के बीच चले एक क्रांतिकारी आंदोलन और 1772 तथा 1776 के बीच चलाने वाले एक स्वाधीनता आंदोलन में भेद किया है। 1762 के बाद के दशक के दौर के ऋण संबंधी तथा व्यापारिक संकटों के चलते जो मजबूत आंदोलन हुए उन्होंने न केवल ब्रिटेन को अपनी राजस्व नीति बदलने को बाध्य किया, अपितु उसे आर्थिक सुधारों, "शाही परंपरा व्यवस्था के भीतर" उपनिवेशों की स्थिति तथा "और अधिक आर्थिक प्रभुसत्ता की जरूरत" पर बहस के लिए भी तैयार होना पड़ा। 1762-1772 के दशक के अनुभव ने उपनिवेशों के अभिजात्य वर्ग को ब्रिटिश व्यापारिक व्यवस्था पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित किया, किंतु 1772 के संकट ने "सुधार की संभावना के इस भ्रम" को भी नष्ट कर दिया और "यह स्पष्ट हो गया कि असली समस्या स्वयं साम्राज्य ही था।" 1772 के बाद के स्वाधीनता आंदोलन ने न केवल नए मुद्दों को उठाया, अपितु 1774 के बाद इसने संघर्ष में किसानों को भी अच्छी संख्या में शामिल कर लिया। औपनिवेशिक आयातों के माध्यम से कारीगरों के उत्पादन पर लगाए जाने वाले प्रतिबंधों, कागजी मुद्रा पर लगे प्रतिबंधों के कारण धन की आपूर्ति पर लगी रोक तथा सम्राट और संसद की ओर से अमरीकी स्वायत्तता पर होने वाले प्रहार ने अमरीकी उपनिवेशों के अभिजात्य वर्ग की विचारधारा तथा दृष्टिकोण को ही बदल दिया।

अनुपभोग (नॉन कंसम्शन) तथा आयात न करना (नॉन इम्पोर्टेशन) आंदोलन में सक्रिय रहने वाले शहरी निम्न वर्गों अर्थात कारीगरों, मिस्त्रियों तथा दिहाड़ी मजदूरों में एक प्रकार की वर्ग चेतना आ गई। हालांकि

अमरीकी अभिजात्य वर्ग को मिस्तरियों तथा कारीगरों तथा मजदूर वर्गों द्वारा हो रहे लोकतंत्रीकरण के पक्ष में जाते दबाव पसंद नहीं थे, फिर भी "उन्हें वर्गहित की विचारधारा का भय नहीं था... अभिजात्य वर्ग को भय था तो एक संपत्तिविहीन आम जनता का।" गरीबों, भूखों तथा बेरोजगारों के विरोधों को स्थिरता के लिए खतरा माना गया जबकि कारीगरों तथा किसानों के साथ गठबंधन औचित्यपूर्ण थे। 1772 में अर्थव्यवस्था के ध्वस्त होने के बाद ही शाही व्यवस्था के भीतर व्यावहारिक सुधार के लिए होने वाला आंदोलन अमरीकी स्वाधीनता के लिए एक क्रांतिकारी मांग में बदल गया।

सर्वाधिक क्रांतिकारी उपनिवेश पेनसलवेनिया में कारीगरों को 1760 के दशक के दौरान लामबंद किया गया था और 1772 में उस्ताद दस्तकारों ने अपना स्वयं का संगठन, सदस्य तथा नीतियां बना लीं। किंतु, उससे भी अधिक क्रांतिकारी रहा गरीब कारीगरों, कमेरों, प्रशिक्षुओं तथा मजदूरों को एक नागरिक सेना (मिलिशा) के रूप में लामबंद करना। इस नागरिक सेना में अधिकत्तर गरीब कारीगर तथा मजदूर थे। एरिक फोनर के अनुसार, फिलाडेलफिया के निम्न वर्गों के अनेक लोगों के लिए यह "भीड़ से संगठित राजनीति की ओर संक्रमण की दिशा में पहला कदम" था। अंग्रेजी गृह युद्ध की न्यू मॉडल आर्मी की तरह नागरिक सेना "राजनीतिक लोकतंत्र की एक पाठशाला" थी। नागरिक सेना के सामान्य सैनिकों ने 1775-1776 के दौरान अपने समस्त अधिकारियों को चुनने का अधिकार मांगा और कभी कभी तो यहां तक सुझाव दिया कि सभी अधिकारियों को एक वार्षिक मतदान से चुना जाए। उन्होंने मांग रखी कि प्रत्येक सहचारी सदस्य (असोशिएटर) को बोट करने का अधिकार हो चाहे उसकी संपत्ति संबंधी योग्यता जो भी हो तथा नागरिक सेना में सेवा करने को सबके लिए अनिवार्य कर दिया जाए तथा जो लोग सहचारी न बनें उन पर मोटा जुर्माना किया जाए और इस जुर्माने की राशि का उपयोग सहचारी सदस्यों के परिवारों के भरण पोषण के लिए किया जाए। फिलाडेलफिया की नागरिक सेना का उभरना निम्न वर्ग के समुदायों के राजनीतिकरण का प्रतीक था और गवर्नर मौरिस ने न्यूयॉर्क की एक जन सभा के बारे में कहा था वह फिलाडेलफिया पर भी लागू होता है कि : "भीड़ ने सोचना तथा तर्क करना शुरू कर दिया।"

फिलाडेलफिया के निम्न वर्गों की क्रांतिकारिता का कुछ श्रेय महा जाग्रति के पुनर्जागरणवाद को दिया जा सकता है जिसने स्कॉच आयरिश प्रेस्बेटेरियनों (पादरी संघ शासित गिरजों के सदस्यों) को प्रभावित किया। इन प्रेस्बेटेरियनों में से अधिकांश कारीगर, मजदूर अथवा नौकर थे। इवेंजेलिकल तथा तर्कवादी गणतंत्रवादी दोनों के ही फिलाडेलफिया के कारीगर समुदाय से मजबूत रिश्ते थे, और दोनों ही स्वर्ण युग की भाषा बोलते थे और अमरीकी समाज के आंतरिक रूपांतरण की बात करते थे।

पंद्रह हजार की आबादी वाला कस्बा बॉस्टन 1760 के दशक में क्रांतिकारी गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केंद्र था, हालांकि 1768 के बाद से वहां 2000 ब्रिटिश सैनिकों की मौजूदगी ने शायद निम्न वर्ग की भागीदारी और भीड़ के क्रियाकलापों को सीमित कर दिया था। 1763-68 के दौरान स्टाम्प अधिनियम के विरूद्ध होने वाले संघर्ष के दौर में अभिजात्य वर्ग के नेताओं के शुरू किए गए आंदोलन के परिणामस्वरूप स्थानीय सामाजिक तथा आर्थिक शिकायतों को लेकर अनायास दंगे हो गए। अगस्त 1765 में "अल्पविकसित वर्ग भावना" की अभिव्यक्ति धनी अधिकारियों के विरूद्ध कार्रवाई के रूप में हुई और इसके "उच्च वर्गों पर एक अधिक सामान्यीकृत हमले का रूप ले लेने का खतरा बन गया।" प्रभुत्वशाली अभिजात्य वर्ग को यह भय हो गया कि निम्न वर्ग की यह कार्रवाई कहीं "लूट का युद्ध" अथवा "आम समानीकरण का युद्ध" का रूप न ले लें, और इसलिए उन्होंने अपनी सत्ता को फिर से थोपने के लिए सशस्त्र गश्त तथा गिरफ्तारियों का सहारा ले लिया। टाउनजेंड शुल्कों का विरोध करने वाले सौदागर वैसे तो संभावित रूप में खतरनाक निम्न वर्ग के सहयोगियों से निपटने को अनिच्छुक थे, फिर भी अनायातन (आयात न करना) आंदोलन को सक्रिय करने के लिए उन्होंने भीड़ का समर्थन लिया। 1768 में कुछ सौदागर अपने सामान को कस्टम अधिकारियों से छुड़ाने के लिए सामाजिक अशांति तथा दंगों का खतरा मोल लेने को तैयार थे। शाही नीतियों का सीधा प्रभाव जब बॉस्टन के निम्न वर्गों पर पड़ने लगा तो उन्होंने अपनी ही पहल पर तेजी से कार्रवाई की। लेकिन ये लोग नगर परिषद् के अधिक औपचारिक माहौल में अपनी पांच शिकायतों को प्रभावी ढंग से नहीं रख पाए। निम्न वर्ग के नागरिकों की अनेक शिकायतें थीं — बेरोजगारी, सिपाहियों के छुट्टी के घंटों में उनकी मजदूरों के साथ प्रतिस्पर्धा, सिपाहियों के साथ हंगामा आदि। नाविकों, गोदी कर्मचारियों तथा मिस्तरियों और सिपाहियों के बीच टकराव के परिणामस्वरूप मार्च 1770 में बॉस्टन का नरसंहार हुआ। विग नेताओं ने जल्दी ही भीड़ पर फिर से काबू कर लिया; इसके लिए उन्होंने

जो कदम उठाएं उनमें एक था जहाज बनाने की अनुमति देना जिससे सैकड़ों मिस्तरियों की बेरोजगारी दूर हो गई। जब तक चाय अधिनियम के विरूद्ध आंदोलन शुरू हुआ, नवम्बर 1772 में गठित 'बॉस्टन कमेटी ऑव कॉरिस्पांडेंस' ने समूचे प्रांत में अपने संपर्क बना लिए थे और बॉस्टन के आम जन ने व्यापक तौर पर विग नेताओं के पक्ष में जाने वाले ब्रिटिश विरोधी ढांचे के अंदर रहते हुए काम किया। 1773 आते आते बॉस्टन के अभिजात्य वर्ग ने ब्रिटिश विनियमों के निम्न वर्ग पर पड़ने वाले स्थानीय प्रभावों को शाही समस्याओं के बारे में संवैधानिक सिद्धांतों के साथ जोड़ने में सफलता प्राप्त कर ली थी और अगस्त 1765 में जो वर्ग चेतना उभरी थी उसे उचित ढंग से मुखरित होने से रोक दिया था।

क्रांतिकारी युद्ध का परिणाम यह हुआ कि साधारण लोगों पर भारी मांग उठी और जनता में असंतोष पैदा हुआ। क्रांति ने और भी क्रांतिकारी विचारों को प्रेरित किया तथा क्रांतिकारी अभिजात्य वर्ग को इस बात के लिए बाध्य किया कि वे जनता के प्रति और भी समायोजनकारी तथा समझौतावादी दृष्टिकोण अपनाएं।

3.3.3 क्रांति तथा इसके परिणाम

अमरीकी क्रांति आंशिक रूप में सम्राट की ओर से संरक्षकत्व तथा पदों में होने वाली चालबाजी के विरूद्ध एक प्रतिक्रिया थी। जस्टिस ऑव द पीस, नागरिक सेना के अधिकारी, जज, शेरिफ जैसे स्थानीय अधिकारियों की नियुक्ति वरजीनया के अतिरिक्त अन्य सभी शाही उपनिवेशों में सम्राट की कृपा पर निर्भर करती थी। वहीं ब्रिटेन में इन्हीं पदों पर नियुक्ति के मामले में इतना शाही हस्तक्षेप नहीं था। इस स्थानीय स्तर पर शाही संरक्षकत्व से शत्रुता का मतलब होता था शाही व्यवस्था से शत्रुता। 1776 के राज्य के नए क्रांतिकारी संविधानों मे नियुक्ति का अधिकार उन अनेक बुराइयों में शामिल था जिन्हें रोकने तथा समाप्त करने की चेष्टा अमरीकियों ने की। अठारहवीं शताब्दी के राजसी तथा पारंपरिक्र विश्व दृष्टिकोण में शासकों का सामाजिक तथा नैतिक दोनों दृष्टियों से सम्मानजनक होना जरूरी था। गॉर्डन वुड के अनुसार "अमरीकी क्रांति आंशिक रूप में इन परस्पर भिन्न विवेचनाओं के ऊपर लड़ी गई कि अमरीका में उपयुक्त सामाजिक नेता कौन थे जिन्हें स्वाभाविक रूप में सार्वजनिक सत्ता के पदों पर आसीन किया जाना चाहिए।" अठारहवीं शताब्दी में उपनिवेशों की राजनीति बुनियादी तौर पर राज्य पर अधिकार जमाने के लिए प्रमुख घरानों के बीच होने वाली लड़ाई थी। दासता पर कानूनी नियंत्रणों की अपेक्षा, भद्रजन की शक्ति पर आधारित राजनीति के व्यक्तिगत ढांचे ने ही जन साधारण को राजनीति में भागीदारी से रोका। अठारहवीं शताब्दी के पितृसत्तावादी तथा आमने सामने के संबंधों में पारंपरिक अधिकारों तथा नैतिक अर्थव्यवस्था में आस्था पर आधारित बार बार होने वाले दंगों तथा हुल्लड़बाजी को स्थानीय समुदाय ने और कहीं कहीं तो भद्रजनों ने भी स्वीकार कर लिया था। ब्रिटिश दमन के विरूद्ध अमरीकी प्रतिरोध के दौर में जनता की भागीदारी ने काफी बड़ा रूप ले लिया; इस भागीदारी को प्रारंभ में भद्रजनों तथा सौदागरों की ओर से उकसाया तथा प्रोत्साहित किया गया था। 1776-1783 के अमरीकी स्वतंत्रता संग्राम तथा प्रतिरोध के दौर में, अठारहवीं शताब्दी के अंत के प्राचीन शासन के चिर परिचित प्रभाव तथा संरक्षकत्व तंत्र का सफाया कर दिया गया। अमरीकी क्रांति ने कुलीन तंत्र के विशेषाधिकारों, शाही समाज तथा गुलामी समेत वस्तुतः हर प्रकार की पराधीनता पर हमले का प्रतिनिधित्व किया। किंतु, अंतिम विश्लेषण में अमरीकी क्रांति की मुख्य उपलब्धियां थीं राजनीति में आम जनता की भागीदारी का विकास और आर्थिक विकास तथा राजनीतिक समानता के आदर्शों पर आधारित मुक्त बाजार का उदय।

अमरीकी क्रांति ने शाही समाज तथा कुलीन तंत्र के विशेषाधिकारों को करारा झटका दिया। अमरीका के स्वाधीनता संग्राम के दौरान ब्रिटेन का समर्थन करने वाले राजभक्त कुल पांच लाख लोग थे, अर्थात गोरे अमरीकियों का 20 प्रतिशत। लगभग 80,000 राजभक्त क्रांति के दौरान अमरीका छोड़ कर चले गए और उनके जाने से सत्ता का पुराना औपनिवेशिक पुश्तैनी ढांचा कमजोर पड़ गया। पुराने औपनिवेशिक समाज के कुछ प्रमुख सदस्यों के चले जाने से वास्तव में उनके लिए जगह बन गई जिन्हें जेफरसन ने "गुण तथा प्रतिभा का कुलीन तंत्र" कहा था। क्रांति के बाद सभी रियासतों ने ज्येष्ठाधिकार तथा अनिवार्य उत्तराधिकार के कानूनों को समाप्त कर दिया, जिनके चलते बड़ी जागीरों तथा घरानों को संरक्षण मिल रहा था, हालांकि ये प्रथाएं समय के साथ लुप्त हो रही थी। संपत्ति के उत्तराधिकार तथा अधिग्रहण के मामलों में विधवाओं तथा पुत्रियों के समान अधिकार को मान्यता दी गई। क्रांति के बाद पत्नियों पर पुरूषों का पितृसत्तात्मक नियंत्रण कम हो गया, पत्नियों को यह अधिकार मिल गया कि वे अपने पतियों की अनुपस्थिति में व्यापार कर सकती हैं, अनुबंध कर सकती

हैं तथा अपनी अलग संपत्ति रख सकती हैं। दक्षिणी कैरलाइना को छोड़ अन्य सभी राज्यों ने तलाक के उदार कानून लागू किए। विधवाओं को जागीरों पर एक तिहाई का अधिकार मिल गया, जबकि पहले यह प्रथा थी कि वे बस जीवन भर उसका उपयोग कर सकती हैं। अमरीकी क्रांति ने न केवल काश्तकारी के सामंती स्वरूपों को समाप्त किया, अपितु परिवार के प्रति अपेक्षाकृत अधिक प्रबुद्ध दृष्टिकोण का समर्थन किया।

बोध प्रश्न 2

1) अमरीकी क्रांति में योगदान करने वाले महत्वपूर्ण कारकों का विश्लेषण कीजिए। 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

2) अमरीकी क्रांति के परिमाणस्वरूप जो बदलाव आए उनमें से कुछ महत्वपूर्ण बदलावों की चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

3.4 संविधान का निर्माण

अमरीकी स्वाधीनता संग्राम ने सभी तेरह अमरीकी उपनिवेशों को एक करने में मदद की, किंतु ये उपनिवेश अपने विशिष्ट आर्थिक हितों तथा राजनीतिक स्वाधीनता को छोड़ने के इच्छुक नहीं थे। 1781-1787 के 'परिसंघ के नियमों' के तहत, केंद्र सरकार बेहद कमजोर थी, अधिकांश सत्ता राज्यों के पास थी जिन्होने अपनी संप्रभुता को बनाए रखा था और कांग्रेस के पास व्यापार को नियंत्रित करने अथवा कर लगाने का अधिकार नहीं था। परिसंघ के दौर की कुछ कमजोरियों को तो उन लोगों ने बढ़ा चढ़ा कर पेश किया जो एक मजबूत सरकार तथा एक राष्ट्रीय संविधान के हिमायती थे, किंतु इन नियमों के तहत केंद्र सरकार की वित्तीय स्थिति अत्यंत कमजोर थी। कोई एक राज्य अकेला ही परिसंघ के नियमों को बदलने के किसी भी प्रयास को वीटो कर सकता था।

हालांकि फिलाडेलफिया अधिवेशन में प्रस्तुत 1787 के संविधान को स्वतंत्र तथा दास राज्यों, बड़े तथा छोटे राज्यों और संघवाद समर्थकों तथा संघवाद विरोधियों के बीच अनेक समझौतों के रूप में देखा गया है, फिर भी एक स्तर पर यह एक मजबूत राष्ट्रीय सरकार के लिए विजय का प्रतीक था। संघवाद विरोधियों का रूख एक राष्ट्रीय सरकार के विचार के प्रति स्पष्ट न होने के कारण जीत संघवाद समर्थकों की हुई।

संघवाद विरोधियों को भय था कि मैडिसन जैसे संघवाद समर्थक ऐसा संविधान प्रस्तुत करेंगे जो "मध्यम वर्ग" की कीमत पर कुलीन तंत्र को मजबूत करेगा। इसमें राष्ट्रपति को बहुत अधिक अधिकार दे दिए गए थे जिससे एक निरंकुश सरकार के बनने की आशंका रही। हालांकि कुछ संघवाद विरोधी कांग्रेस को कुछ विशिष्ट कर लगाने का अधिकार देने को तैयार थे, फिर भी वे संघीय आंतरिक अथवा प्रत्यक्ष करों के पक्ष में नहीं थे, क्योंकि इनकी वसूली व्यक्तियों को प्रभावित करती तथा इसके परिणामस्वरूप राज्यों के साथ प्रतिस्पर्धा की स्थिति बनती। संघीय सरकार की जरूरतों को पूरा करने के लिए आयात शुल्कों से होने वाली आय पर्याप्त होती, क्योंकि संघीय ऋण को प्रत्येक राज्य अलग अलग दे सकता था। संघवाद विरोधियों ने प्रत्यक्ष कर लगाने की प्रक्रिया पर आंशिक नियंत्रण बनाए रखने की कोशिश की और यह आशा बांधी कि जनता "पैसे और तलवार के संयोग से सुरक्षित" रहेगी। सशस्त्र बलों का सेनापति होने के नाते राष्ट्रपति तथा कांग्रेस एक निकाय के रूप में शांति काल में भी

सेना बनाने के अधिकार की मदद से अनुचित कर वसूल कर सकते थे और इस सेना का रख रखाव उन दमनकारी टैक्सों से किया जा सकता था। संघवाद विरोधियों को यह भी भय था कि "आम कल्याण" तथा "आवश्यक एवं उपयुक्त" की बात करने वाली संविधान की अपरिभाषित धाराएं सत्ता के केंद्रीकरण को जन्म देंगी जिसका आधार मैडिसन द्वारा प्रतिपादित अंतर्निहित अधिकारों का सिद्धांत होगा। जब राज्यों ने संविधान में संशोधन करना शुरू किया तो उस दौर में यह स्पष्ट हुआ कि दस में से कम से कम नौ संघवाद विरोधी एक 'अधिकार विधेयक' के पक्ष में थे। विवेक अथवा धर्म की स्वतंत्रता, जूरी के सामने मुकदमें का अधिकार तथा समाचार माध्यम की स्वतंत्रता ऐसे तीन अधिकार थे जिनकी मांग बार बार उठाई गई। हालांकि फिलाडेलफिया अधिवेशन ने दुनिया के सर्वप्रथम विस्तृत तथा लिखित लोकतांत्रिक संविधान को प्रस्तुत किया, फिर भी 1791 में अधिकार विधेयक बनने की स्थिति संविधान के संशोधन की प्रक्रिया के दौरान उठने वाली बहस तथा असहमतियों के परिणामस्वरूप ही आ पाई। ये अमरीकी संविधान में होने वाले पहले दस संशोधन थे। इन अधिकारों में से केवल एक अधिकार राज्यों के अधिकारों से संबंधित था, बाकी सब व्यक्तिगत स्वतंत्रताओं से संबंधित थे।

चार्ल्स बियर्ड ने अमरीकी संविधान की एक आर्थिक विवेचना प्रस्तुत की, जिसके अनुसार सौदागर, महाजन, सिक्योरिटी होल्डर्स, वित्तदाता तथा निर्माता इसलिए संविधान के समर्थक थे क्योंकि उन्हें इससे फायदा होने की उम्मीद थी। उनके विरोधी भूसंपत्ति के स्वामी, विशेषकर वे कर्जदार तथा छोटे किसान थे जिन्हें यह भय था कि एक मजबूत राष्ट्रीय सरकार कर लगाएगी और अमरीकी सरकार की ऋण संबंधी साख को बढ़ाने के लिए उसी के अनुसार नीतियां अपनाएगी जिससे सस्ती मुद्रा के समर्थक तथा कर्जदार आहत होंगे।

अमरीकी संविधान तो अधिकारों के अलगाव के सिद्धांत पर आधारित था, जिससे सरकार का कोई एक अंग : कार्यपालिका, विधायिका अथवा न्यायपालिका, हावी न हो जाए। इस संविधान में सीनेट में प्रत्येक राज्य को समान प्रतिनिधित्व के संघीय सिद्धांत को एक राष्ट्रीय सरकार तथा लोकतांत्रिक ढंग से निर्वाचित प्रतिनिधि सभा के सिद्धांत से मिला कर भी रखा गया था। सर्वोच्च न्यायालय को संविधान की विवेचना का अधिकार दिया गया। अठारहवीं शताब्दी में संविधान ने एक मजबूत राष्ट्रीय सरकार के लिए आधार बना दिया, जो उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में तेजी से आधुनिक बनते एक समाज की समस्याओं से निपटने में समर्थ साबित हुआ। इधर अमरीका एक ऐसे बाजारोन्मुख समाज के रूप में विकसित हो रहा था जहां एक औद्योगिक सभ्यता उभर रही थी, तो उधर संघवाद समर्थकों का राष्ट्रवादी रूझान तथा मूल्य नए युग की आवश्यकताओं के लिए अधिक उपयुक्त दिखाई दे रहे थे। मैडिसन जैसे संघवाद समर्थकों ने जिस संविधान को रचने में मदद दी थी, वह 1790 के दशक में ऐलिग्जेंडर हैमिल्टन के राष्ट्रीय विकास के कार्यक्रम का आधार था। हैमिल्टन "एक साझा निर्देशक शक्ति" की जरूरत में पक्का विश्वास करता था और जेफरसन के इस गणतंत्रवादी विचार से सहमत नहीं था कि अल्पतम प्रशासन ही श्रेष्ठतम प्रशासन था। 1790 में वित्त मंत्री रहते हुए उसने एक महान वित्तीय सैनिक राज्य बनाने की कोशिश की किंतु वाणिज्यिक पूंजीवाद की उठती लहरें ही अंत में विजयी रहीं : विखंडित प्रबुद्ध नेताओं की संघवाद समर्थक स्थिति को बनाए रखना इन दोनों कारणों से कठिन साबित हुआ कि (i) अधिकांश संघवाद समर्थकों के लिए इस आदर्श पर खरा उतरना कठिन साबित हुआ और (ii) उन्नीसवीं शताबदी के प्रारंभिक वर्षों तक आते आते अमरीका में एक जीवंत बाजारोन्मुख वाणिज्यिक अर्थव्यवस्था का विकास हो गया। सच पूछें तो अमरीका में कुलीनतंत्र पर हमला एक आदर्श के रूप में इतना सफल था कि निठल्लापन शर्म की बात हो गई और मेहनत सम्मान का विषय हो गया।

अमरीका में 1820 के दशक में जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व उभरे उनमें से एक था पैसा बनाने तथा आत्म हित के विचार के प्रति उत्साहपूर्ण समर्थन। ये विचार अमरीकी आस्थाओं के साथ स्वतंत्रता के आदर्शों तथा सुख की खोज में जुड़े थे। अनेक अमरीकियों के लिए तो पैसा बनाने की योग्यता ही मनुष्यों का आकलन करने का एक मात्र उपयुक्त लोकतांत्रिक तरीका था, उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि अथवा शिक्षा नहीं। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में ही एक 'स्वनिर्मित पुरूष' के रूप में बेंजामिन फ्रेंकलिन की छवि को प्रचार मिला, जब उसकी आत्मकथा के कई संस्करण छपे। जैसा कि 1830 के दशक तक टॉकवील ने निष्कर्ष दिया, निजी स्वार्थ ही अशांत तथा विविध अमरीकी लोगों को एकजुट किए हुए था, "वह निजी स्वार्थ जो प्रत्येक क्षण में उभरता है, यही नहीं, वह स्वार्थ जो खुल कर सामने आता है तथा अपने आपको एक सामाजिक सिद्धांत के रूप में घोषित भी करता हैं।" अमरीका में निजी स्वार्थ, पैसा बनाने तथा सुख के पीछे भागने की प्रवृति का परिणाम 1770 के दशक की अमरीकी क्रांति के काल की अपेक्षा 1820 तथा 1830 के दशकों में धन के मामले में और भी अधिक असमानता

के रूप में सामने आया। किंतु अधिकांश अमरीकी यही महसूस करते थे कि वे उस समय की तुलना में अब अधिक समान तथा लोकतांत्रिक हो गए थे। 1776 में ऐडम स्मिथ ने "विवेक को लाने के लिए मानवीय स्वार्थ को छोड़ने तथा विवेक के माध्यम से मनुष्यों के बीच आर्थिक संबंधों में संपन्नता लाने की वकालत की।" हालांकि बेलिन् ने यह टिप्पणी अमरीकी क्रांति पर प्रभाव डालने के लिए वेल्थ ऑव नेशन्स के विचारों पर की थी, यह बात उन्नीसवीं शताब्दी के पहले पच्चीस वर्षों में उभरने वाले अमरीका पर और भी जोरदार ढंग से लागू होती है।

अमरीकी संविधान निश्चित रूप से 'परिसंघ के नियमों' का परिष्कृत रूप था, किंतु सच में राष्ट्रवादियों की वरजीनिया योजना लोकतंत्र की बहुतायत से उठने वाली समस्याओं का एक कुलीनतंत्रीय समाधान था जिसने जॉर्ज वाशिंगटन तथा जेम्स मैडिसन जैसे व्यक्तियों को भी चौंका दिया।

अमरीका का संविधान वास्तव में एक राष्ट्रीय तथा एक संघीय सरकार के बीच "मध्य भूमि" का प्रतीक था। जेम्स मैडिसन "एक गणतंत्र के उपयोगी क्षेत्र" की तलाश कर रहा था, जो निरंकुश बहुसंख्यकों के अत्याचार तथा स्थानिकता की ज्यादतियों को और उदासीन शासकों के हाथों में सत्ता के संकेंद्रण को भी रोक सके।

बोध प्रश्न 3

1) अमरीकी संविधान की कुछ प्रमुख विशेषताएं बताइए। 60 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

2) अमरीकी संविधान के सवाल पर संघवाद समर्थकों तथा संघवाद विरोधियों के बीच क्या मतभेद थे? 50 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

3.5 दासता पर आधारित लोकतंत्र

अमरीकी लोकतंत्र के टिप्पणीकारों ने इसे हमेशा विरोधाभासपूर्ण अथवा लज्जाजनक माना है कि 1776 में स्वाधीनता का घोषणापत्र लिखने वाला तथा अमरीका में गणतंत्रवाद का एक महान समर्थक टॉमस जेफरसन स्वयं गुलाम पाले हुए था। जेफरसन के रहन सहन के ढंग को बनाए रखने के लिए कोई पचास गुलामों को बेचना पड़ा था और उसके मरने के बाद उसके कर्जों को चुकाने के लिए कुछ और गुलामों को बेचा गया, जब जाकर उसकी अंतिम वसीयत के अनुसार उसके सौ से भी अधिक गुलामों में से केवल 10 प्रतिशत के आसपास को आजादी मिल पाई। 1787 के अमरीकी संविधान में भी गुलामी को मान्यता मिली और सच में तो इसका आधार दक्षिण के गुलाम पालक राज्यों तथा उत्तर के स्वतंत्र राज्यों के बीच होने वाला एक समझौता ही था।

अमरीका में दासता को एक "अनूठी संस्था" कहा जाने लगा, इसने इस बारे में कुछ विवाद भी खड़े किए कि अमरीका में इसके भौगोलिक प्रसार को रोकने के उचित तरीके क्या हो सकते हैं, और इसके परिणामस्वरूप 1808 में अफ्रीकी दास व्यापार पर कानूनी प्रतिबंध लगा दिया गया, किंतु गुलामों का इस्तेमाल नई दुनिया में व्यापक स्तर पर प्रचलित था। दासता की संस्था गुलामों की जिंदगी पर समाज के नियंत्रण के आर्थिक शोषण पर आधारित थी। बीसवीं शताब्दी के पैमाने से दासता के पक्ष में तो कुछ भी नहीं कहा जा सकता, किंतु हाल के

इतिहासकारों ने दासता की व्यवस्था को समझने की कोशिश केवल इसकी निंदा करने के उद्देश्य से नहीं की है। हालांकि दासता की प्रथा शोषणकारी थी, फिर भी गुलामों के मालिकों को यह ध्यान रखना पड़ता था कि उन्हें पौष्टिक आहार तथा दवाइयां मिलती रहें, ताकि उनकी काम करने की क्षमता तो सुनिश्चित रहे।

दासता का मुद्दा 1787 के संविधान को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक था। अमरीकी गणतंत्र के संस्थापक ज्ञानोदय के लोकतांत्रिक विचारों तथा आर्थिक एवं वर्गीय हितों से प्रभावित थे। दासता के मुद्दे पर उत्तर के स्वतंत्र राज्य दक्षिण के गुलाम राज्यों से अलग हो गए, क्योंकि दक्षिण के राज्य दासता के जारी रहने की स्थिति में सधने वाले अपने आर्थिक हितों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। यह तर्क बार बार दिया गया है कि अमरीकी उपनिवेशों में आर्थिक तथा राजनीतिक विभाजनों पर आधारित राष्ट्रीय अथवा केंद्र सरकार के प्रति जो गहरा अविश्वास था, वह परिसंघ के नियमों (1781-1787) की कमजोरी के स्पष्ट हो जाने के बाद भी पक्की एकता की राह में रोड़ा था। यदि 1787 के संविधान में दासता को मान्यता नहीं दी जाती तो यह खतरा था कि गुलाम रखने वाले राज्य संघ में शामिल होने से इंकार कर सकते थे अथवा गुलाम राज्यों के दक्षिण में पड़ने वाले स्पेन शासित क्षेत्रों के प्रभाव में आ सकते थे। दासता को कानूनी तथा संवैधानिक मान्यता देना अमरीकी संघ की रचना तथा संरक्षण के लिए एक आवश्यक शर्त माना गया। जॉन रटलिज तथा दक्षिण के अन्य प्रतिनिधि उस प्रावधान के विरूद्ध वोट करने को सहमत हो गए जिसके अनुसार व्यापार से संबंधित कानून बनाने के लिए राष्ट्रीय विधायिका का दो तिहाई बहुमत जरूरी था। ऐसा इसलिए किया गया ताकि गुलामों के आयात पर रोक लगाने की व्यवस्था को और आगे बढ़ाने के पक्ष में रॉबर्ट शर्मन तथा न्यू इंगलैंड के अन्य प्रतिनिधियों का समर्थन लिया जा सके।

हालांकि अमरीका के संस्थापक कोई दकियानूस गुलाम मालिक नहीं थे, फिर भी दासता को समाप्त करने की समस्या से निपटने की उनमें इच्छा नहीं थी। अमरीकी लोग संपत्ति की पवित्रता को अत्याधिक महत्व देते थे और क्योंकि गुलाम भी एक प्रकार की संपत्ति थे तो इसलिए मालिकों को उचित मुआवजा दिए बिना गुलामों को मुक्ति देना संभव नहीं था। गुलामों की आजादी की किसी भी योजना का यह एक अवरोध था। दासता को प्रतिबंधित करने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपाय वह प्रावधान था जिसके अनुसार कांग्रेस को गुलामों को आयात पर पाबंदी लगाने की अनुमति संविधान लागू होने के बीस वर्ष बाद मिली। अमरीका के गुलामों के आयात पर पाबंदी लगाने के बाद क्यूबा तथा ब्राजील के लोगों ने मिल कर पंद्रह लाख से भी अधिक अफ्रीकियों को अपने चीनी तथा चाय बागानों के लिए आयात किया।

उत्तर पश्चिम अध्यादेश (1787) ने मध्य पश्चिमी क्षेत्र में दासता पर प्रतिबंध लगा दिया। 1784 में इससे भी अधिक क्रांतिकारी अध्यादेश पारित हुआ था जिसके अनुसार यह प्रस्तावित हुआ कि गुलामी को 1800 के बाद सभी नए अमरीका शासित क्षेत्रों में फैलने की छूट नहीं दी जाएगी। उत्तरी तथा दक्षिणी राज्य तो कांटिनेंटल कांग्रेस से स्वीकृति लेने में असमर्थ रहे थे। इलिनॉय, इंडियाना, ओहायो, मिशिगन तथा विस्कांसन के भावी राज्यों में दासता पर प्रतिबंध लगाने वाले अध्यादेश (1787) को गुलाम दक्षिणी राज्यों ने इसलिए स्वीकार कर लिया था ताकि उत्तरी राज्यों के गुलाम मालिकों की उत्पादित तंबाकू तथा नील जैसी प्रमुख वस्तुओं के उत्पादन में प्रतिस्पर्धा को कम किया जा सके।

इस प्रकार गणतांत्रिक भावनाओं तथा 1787 तथा 1807 में गुलामी की प्रथा को फैलने से रोकने संबंधी विधान ने गुलाम दक्षिणी राज्यों को कमजोर करने तथा अमरीकी क्रांति के बाद गुलामी को धुर दक्षिण में एक पीढ़ी में बांध देने में मदद की। अगर फूट का खतरा टाला जा सके तो नरमपंथी सुधारवादी वहां दासता को समाप्त करने को तैयार थे जहां आर्थिक दायित्व कम था और जहां अश्वेतों की आबादी अनुपात में कम होने के कारण वहां गुलामी को समाप्त करना अपेक्षाकृत आसान था।

हालांकि दासता को संविधान में मान्यता मिली थी, फिर भी इस शब्द का प्रयोग इस प्रथा को समाप्त करने वाले तेरहवें संशोधन में मात्र एक बार हुआ। स्वयं संविधान में गुलामों का उल्लेख केवल "अन्य व्यक्तियों" अथवा "सेवा या मजदूरी में नियुक्त व्यक्ति" के रूप में किया गया है। संविधान में ऐसे पांच प्रावधान थे जिनमें दासता को स्पष्ट रूप में मान्यता दी गई थी। पारंपरिक इतिहासकारों के विचार के विपरीत अधिवेशन के दौरान 3/5 की धारा कराधान तथा प्रतिनिधित्व पर समझौते की प्रतीक नहीं थी। वास्तव में तो इसकी शुरुआत उन

के बीच समझौते के रूप में हुई जो प्रतिनिधित्व के उद्देश्य से गुलामों को पूरा-पूरा गिनना चाहते थे और दूसरे वे जो गुलामों की गिनती करने के बिल्कुल खिलाफ थे।

उत्तरी तथा दक्षिणी राज्यों के बीच जिस समझौते के फलस्वरूप अमरीकी संघ तथा 1787 के संविधान का निर्माण हुआ उसमें प्रत्येक गुलाम को प्रतिनिधित्व तथा कराधान दोनों उद्देश्यों से एक व्यक्ति का 3/5 होना था। 1790 में इस 3/5 की धारा के आधार पर दक्षिणी राज्यों ने प्रतिनिधि सभा तथा निर्वाचन मंडल में 47% स्थानों पर नियंत्रण कर लिया, हालांकि वे राष्ट्र की श्वेत आबादी का लगभग 40% थे। 14 अतिरिक्त निर्वाचकों की मदद से टॉमस जेफरसन 73-65 के अनुपात से जॉन ऐडम्स को हरा कर अमरीका के राष्ट्रपति बन गए। अगर 3/ 5 जैसी कोई धारा नहीं होती तो संघवाद समर्थक ऐडम्स ने 63-61 के अत्यंत कम अंतर से 1800 का चुनाव जीत लिया होता। जेफरसन का युग 3/5 की इस अलोकतांत्रिक धारा के बिना संभव नहीं होता।

जब अठारहवीं शताब्दी के कुलीनतंत्रीय गणतंत्रवाद की जगह उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में जैक्सन युग के अपेक्षाकृत अधिक समतावादी गणतंत्रवाद ने ले ली तो गुलाम मालिकों का पक्ष लेने वाली इस धारा पर उत्तरी राज्यों के राजनीतिज्ञों तथा जनमत ने अपनी अप्रसन्नता जता दी। इसके अतिरिक्त उन्नीसवीं शताब्दी में सार्वजनिक भूमि की बिक्री तथा विदेश व्यापार पर सीमा शुल्क के माध्यम से कांग्रेस क्योंकि संसाधन जुटाने में समर्थ रही, इसलिए गुलामों को और अधिक प्रतिनिधित्व के लिए और अधिक प्रत्यक्ष कर देने की जरूरत नहीं रह गई।

दासता की उपस्थिति को केवल अमरीकी समाज के माथे पर कलंक ही नहीं माना गया है, अपितु अमरीका में पूंजीवादी विकास की राह का रोड़ा भी समझा गया है। चार्ल्स बियर्ड जैसे अनेक अमरीकी इतिहासकारों तथा बैरिंगटन मूर जैसे समाजविज्ञानियों ने 1861-65 के अमरीकी गृह युद्ध को एक पूंजीवादी आंदोलन माना है जिसने अमरीका के आर्थिक विकास को गति दी। दासता की समस्या को सुलझाने में अमरीकी क्रांति की असमर्थता पर अंत में कृषि प्रधान दक्षिण के गुलाम राज्यों पर उद्योग प्रधान स्वतंत्र उत्तरी राज्यों की जीत के सहारे काबू पाया गया। बागानों में गुलामी का अंत करके तथा गुलामों को मुक्ति दे कर स्वतंत्र उत्तरी राज्यों ने अठारहवीं शताब्दी के अंत की अमरीकी क्रांति के अधूरे काम को पूरा किया। यूजीन जेनोवीज का तर्क था कि दासता ने दक्षिणी राज्यों के आर्थिक विकास को मंद कर दिया क्योंकि गुलामों की कमाई ने स्थानीय बाजार के आकार को दक्षिण राज्यों के औद्योगिक उत्पादनों के लिए सीमित कर दिया। दासता तो शायद अमरीकी व्यक्तिवाद तथा समतावाद के आदर्शों के साथ असंगत रही होगी, किंतु दासता गृह युद्ध के ठीक पहले पतनशील संस्था नहीं थी और गुलाम रखने वाले व्यक्तियों के लिए घाटे का सौदा भी नहीं थी। दासता के अर्थशास्त्र का एक पुराना दृष्टिकोण यह था कि यह अधिकाधिक घाटे का सौदा बनती जा रही थी और गृह युद्ध के बिना भी इसका पतन हो गया होता। दासता के विषय में यह भी विचार था कि इसके परिणामस्वरूप दक्षिण में कृषि उत्पादों पर आवश्यकता से अधिक निर्भरता बनी जिसके कारण यह उत्तरी सौदागरों तथा पूंजीपतियों पर अधिकाधिक आर्थिक निर्भरता की स्थिति में आ गया।

3.6 जन राजनीति तथा जैक्सनी लोकतंत्र का विकास

गणतंत्रवादी विचारधारा का प्रमुख प्रवक्ता जेफरसन एक ऐसे प्रकार के कृषि प्रधान लोकतंत्र में विश्वास करता था जिसमें छोटे छोटे जमींदार किसान लोकतांत्रिक समाज की रीढ़ की हड्डी बनें। इस बात पर बल दिया गया कि छोटी छोटी राजनीतिक इकाईयां हों, जनता तथा उसके प्रतिनिधियों के बीच निकट का संपर्क हो तथा व्यक्तियों के पास एक सार्थक लोकतंत्र को जीवित रखने के स्वतंत्र साधन हों। व्यापार तथा वाणिज्य के बारे में जेफरसन की राय कोई बहुत अच्छी नहीं थी और वह वित्त दाताओं तथा बैंकरों से भी एक प्रकार का बैरभाव रखता था जिनका घातक प्रभाव अथवा धन शक्ति लोकतंत्र के लिए खतरा था। हालांकि जेफरसन का प्रेस की स्वतंत्रता तथा नागरिक स्वतंत्रता तथा अमरीकी संविधान में पक्का विश्वास था, फिर भी उसने अपने आदर्शों के अनुरूप हमेशा व्यवहार नहीं किया। हालांकि उसने 1798 के विदेशी एवं राजद्रोह अधिनियमों के माध्यम से प्रेस तथा नागरिक स्वतंत्रता पर हमला बोलने के लिए ऐडम्स प्रशासन का विरोध किया था, फिर भी 1807-1809 के घाटबंदी (इम्बार्गो) के वर्षों के दौरान राष्ट्रपति के रूप में उसने नागरिक स्वतंत्रता तथा प्रेस

की स्वतंत्रता दोनों का ही सक्रियता से दमन किया। 1798 में भी जब जेफरसन ने अन्यायपूर्ण कानूनों के खिलाफ वरजीनया तथा केंटकी प्रस्तावों को प्रस्तुत किया था तो भी उसने यह कदम इसलिए उठाया था क्योंकि इनसे राज्य के कानूनों का उल्लंघन होता था। वैसे, जेफरसन धर्म संस्था (चर्च) तथा राज्य को अलग अलग रखने की हमेशा हिमायत करता रहा। अमरीकी अर्थव्यवस्था में होने वाले बदलावों ने जेफरसन को व्यापार तथा वाणिज्य, विशेषकर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देने को बाध्य कर दिया और उसके राष्ट्रपति रहने के दौरान रिपब्लिकन पार्टी की वाणिज्यिक शाखा भी बन गई। हालांकि समस्त बाहरी व्यापार पर प्रतिबंध इसलिए लगाया गया ताकि टकराव को टाला जा सके। यह शांतिपूर्ण दमन की नीति थी फिर भी अमरीका में इसके परिणाम खराब रहे और जेफरसन को अपनी प्रतिबंधों की नीति को लागू करने के लिए नागरिक स्वतंत्रताओं को छोड़ना पड़ा। जेफरसन के लोकतंत्र के सिद्धांत और व्यवहार के बीच जो अंतर रहा, वह केवल इसलिए नहीं बना था कि स्वयं जेफरसन में स्थिरता तथा दृढ़ता की कमी थी अथवा एक विपक्ष के नेता तथा एक राष्ट्रपति के राजनीतिक दबावों में अंतर होता है, अपितु इसलिए भी बना था कि अमरीका की अर्थव्यवस्था तथा समाज में बदलाव आ रहे थे।

परिवहन, औद्योगीकरण के क्षेत्र में होने वाले विकास, पश्चिम की ओर होने वाले विस्तार तथा एकाधिकार के विशेषाधिकारों और भ्रष्टाचार के प्रति बढ़ रहे बैरभाव के कारण ऐनड्रू जैक्सन गणतंत्रवाद को लोकतंत्र का रूप देने में समर्थ रहा। केंद्र सरकार की तुलना में राज्य के अधिकारों पर गणतंत्रवादियों के जोर देने का स्थान एक मजबूत राष्ट्रीय सरकार के अंदर ही बहुमत के शासन के सिद्धांत पर जोर देने की आवश्यकता ने ले लिया। जैक्सन इस बात को समझ गया था कि अमरीका के मतदाता सरकार के संचालन में और अधिक हस्तक्षेप चाहते थे। "जनता के नायक के रूप में अपनी भूमिका पर जोर देने" के बल पर जैक्सन कांग्रेस की तुलना में राष्ट्रपति की स्थिति मजबूत करने में समर्थ हो गया। इस स्थिति ने राष्ट्र के संस्थापकों की समान किंतु पृथक नीति को नष्ट कर दिया। इसके लिए सरकार की विधायी शाखा की कीमत पर कार्यपालिका को मजबूत किया गया। वित्त मंत्री डूएन को हटाने से राष्ट्रपति का यह अधिकार पक्का हो गया कि वह कांग्रेस को सूचना किए बिना ही सभी मंत्रियों को हटा या नियुक्त कर सकता है। 1825 के "अपहृत चुनाव" में जॉन ऐडम्स तथा हेंसी क्ले के बीच जो "भ्रष्ट सौदेबाजी" हुई उसके फलस्वरूप जॉन ऐडम्स को राष्ट्रपति पद मिल गया और आम भ्रष्टाचार के इस युग में यह भ्रष्टाचार का चरम था। उसके बाद जैक्सन हमेशा यह कहता रहा कि "बहुमत शासन करने के लिए होता है।" यह तर्क का विषय रहा है कि जनता का "स्थायी गुणगान" जैक्सनी लोकतंत्र का बुनियादी तत्व था। इस गुणगान का जनता आनंद उठाती तथा इसे स्वीकार करती थी। विशिष्ट उपायों की संवैधानिकता के मुद्दे का निर्णय जनता को मतपेटी के माध्यम से करना था। जहां तक जैक्सन का संबंध था, जनता के लोग किसान, मिस्तरी तथा मजदूर थे, व्यापारी तथा पूंजीपति नहीं, छोटे व्यापारी भी नहीं।

जैक्सन अमरीकी सरकार को लोकतांत्रिक बनाने का समर्थक था। नियुक्त पदों को हर चार साल बाद बदला जाना चाहिए और निर्वाचित पदों को सीधे जनता को भरना चाहिए। जैक्सन निर्वाचन मंडल को राष्ट्रपति के चुनाव में समाप्त करना चाहता था, अपनी शासनावधि को चार से छः वर्ष की एक अवधि तक सीमित करना चाहता था, जिससे वह भ्रष्ट करने वाले प्रभावों से बच जाए। सीनेटरों, संघीय जजों तथा अनुमानतः सर्वोच्च न्यायालय के जजों का चुनाव भी उचित रीति से होना चाहिए जिससे कि पद धारण करने के लोकतांत्रिक सिद्धांतों को कायम रखा जा सके। इन उन्नत राजनीतिक विचारों के बावजूद जैक्सन के सुधार उसकी अपनी ही सरकार में भ्रष्टाचार को रोक नहीं पाए। जैक्सन के अनुयायी दासता के समर्थक नहीं थे, हालांकि वे उन्मूलनवादियों से घृणा करते थे, क्योंकि वे उन्मूलनवादियों, शून्यकों (नलीफायर्स) तथा विग के सदस्यों को षड़यंत्रकारी और बहुमत के शासन तथा लोकतंत्र के विरोधी मानते थे। विग के सदस्य तो जैक्सन को अमरीका में दंगों तथा शहरी हिंसा के लिए दोषी ठहराते थे और जैक्सन के अनुयायी इसे इस बात का प्रमाण मानते थे कि विपक्ष के लोग हिंसा भडका कर कुलीनतंत्रीय शासन को बहाल करना चाहते थे।

जैक्सन ने जनरल तथा राष्ट्रपति दोनों ही हैसियतों से पश्चिम की ओर विस्तार के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की पुरजोर कोशिश की और अमरीकी इंडियनों को और भी पश्चिम की ओर निर्ममता से निष्कासित करके उसने इस लक्ष्य को प्राप्त कर ही लिया। जैक्सन के राष्ट्रपति काल के आठ वर्षों में 45,690 से भी अधिक इंडियनों को मिसीसिपी नदी के पार पुनर्वासित किया गया।

जैक्सन एकाधिकार तथा विशेषाधिकार से अत्यंत घृणा करता था, किंतु बैंकरों के लिए उसके मन में कुछ अधिक ही घृणा थी जो अपने निजी लाभ के लिए सार्वजनिक संस्थाओं में हेराफेरी करते थे। इसलिए उसने अपना निशाना सेंकड बैंक ऑफ दि यूनाइटेड स्टेट्स को बनाया जो एक "राक्षसी" संस्था बन गई थी। 1832 में जब विधिवत बैंक युद्ध शुरू हुआ तो वेबस्टर और क्ले ने जैक्सन के फिर से चुने जाने के खिलाफ अभियान छेड़ा। जैक्सन ने न केवल 1832 को चुनाव जीता, अपितु उसने बैंक ऑफ दि यूनाइटेड स्टेट्स को फिर से अनुबंधित करने वाले विधेयक को भी वीटो कर दिया और उसे असंवैधानिक घोषित कर दिया। धातु मुद्रा समर्थक लोकतंत्रवादी यह मानते थे कि छोटे व्यापारी, किसान तथा मजदूरों को मुद्रा के सटोरियों तथा हेरा फेरी करने वालों के हाथों छला नहीं जाना चाहिए। जैक्सन ने बैंक ऑव दि यूनाइटेड स्टेट्स से संघीय कोष निकाल लिया और उस के बाद इस पैसे को 'घरेलू बैंक' (pet banks) कहलाने वाले चुने हुए राजकीय अनुबंधित बैंकों में जमा करा दिया। बिडल का वित्तीय आतंक फैलाने का प्रयास विफल हो गया और 1834 आते आते जैक्सन अपनी जीत हासिल कर चुका था। वैसे, संघीय पैसे को घरेलू बैंकों में जमा करने से सट्टा बाजार में उछाल आया। संघीय सरकार के पास उपलब्ध अतिरिक्त धन के कारण भी मुद्रास्फीति तथा सट्टेबाजी को बढ़ावा मिला, चाहे इस धन को आंतरिक आर्थिक विकास में सहायता पहुंचाने के लिए राज्यों को दिया गया हो अथवा राजकीय घरेलू अनुबंधित बैंकों में जमा कराया गया हो जहां इस पैसे ने इन बैंकों के आरक्षित भंडार को ही बढ़ाया। धातु मुद्रा नीतियां हावी रहीं; इनमें विशेष था 1836 का धातु मुद्रा (सिक्का) आदेश जिसके अनुसार सार्वजनिक भूमि का भुगतान सिक्कों में करना अनिवार्य था। 1839 के बैंकिंग आतंक के बाद आर्थिक मंदी का दौर आया। 1840 में अंततः सरकार ने संघीय पैसे को अमरीकी सरकार के उपकोषागारों में बंद करके रखने का विकल्प चुना। इस योजना ने बैंक को राज्य से अलग कर दिया, किंतु इसने बैंकों के आरक्षित कोष को भी सीमित कर दिया और अमरीका में आर्थिक वसूली की प्रक्रिया को भी धीमा कर दिया।

जैक्सन के अनुसार 1837 में जो बैंकिंग आतंक या भगदड़ की स्थिति बनी उसका कारण अमरीका में उभर आए लखपतियों के एक नए वर्ग का लालच था। वह विशेषकर इन अफवाहों से परेशान था कि अंग्रेजी बैंकर "ब्रिटेन तथा अमरीका दोनों की ही वित्तीय स्थितियों पर नियंत्रण करने के षड़यंत्र" में जल्दी ही बिडल के साथ जा मिलेंगे। इस षड़यंत्र के विरूद्ध अपने उत्तराधिकारी वान बुरेन को आगाह करते हुए जैक्सन ने कहा था, "इंगलैंड तथा अमरीका दोनों जगहों पर मुद्रा का प्रबंध अपने नियंत्रण में लेने का बिडल और बैरिंग का प्रयास प्रत्येक सच्चे गणतंत्रवादी के लिए बेहद आतंकित करने वाला है।" उसने इस आतंक की तुलना "हैजा" से की जो उन लोगों को नष्ट कर देगा जो दुराचारी थे और इससे अमरीका में "सदाचार" की बहाली में मदद मिलेगी। सरकार के घातक कागजी मुद्रा प्रणाली को समाप्त करते ही अर्थव्यवस्था ठीक हो जाएगी और "संख्या के लोकतंत्र का चंद लोगों के कुलीनतंत्र से फिर कभी कोई टकराव नहीं होगा।" जैक्सन के समाधानों में कुछ कुछ अनाड़ीपन था, किंतु बैंकरों तथा उनकी धन शक्ति के प्रति "मजदूर जनता" के बैरभाव ने जैक्सनी राजनीति को वस्तुतः आगामी लोकतांत्रिक राजनीति का एक महत्वपूर्ण तत्व प्रदान किया।

जैक्सन एक ऐसा राष्ट्रपति था जो एक "सकटापन्न गणतांत्रिक परंपरा" का संरक्षक बन कर उभरा। जैक्सन न अमरीका को लोकतंत्र की राह पर अग्रसर नहीं किया। मर्विन मेयर्स के अनुसार, "राजनीतिक लोकतंत्र जैक्सनी पार्टी की उपलब्धि कम और माध्यम अधिक था।" 1820 के दशक के अंतिम वर्षों में जब जैक्सनी आंदोलन खड़ा हुआ, उस समय तक आते आते हैमिल्टन अथवा जॉन ऐडम्स का संघवादी अनुदारवाद "एकदम मुर्दा" हो चुका था। हालांकि जैक्सनी प्रवक्ता "नैतिकता के व्यापक भंडार" से तत्व ग्रहण करते थे, किंतु राक्षसी बैंक के विरूद्ध युद्ध में ही डेमोक्रैटिक पार्टी ने "अपना चरित्र बनाया, अथवा पाया।" जैक्सन की प्रभुत्वशाली उपस्थिति के बिना बैंक के मसले ने 'प्राचीन गणतंत्र' के मूल्यों को बचा कर रखने हेतु एक बड़े संघर्ष का रूप नहीं लिया होता। जैक्सन के अनुयायियों की दृष्टि में बैंक तथा उसके प्रभाव ने धार्मिक वर्ग के भ्रष्टाचार तथा कुलीनतंत्र के विशेषाधिकार और कर्ज तथा कर तथा आर्थिक अस्थिरता की आविक स्थिति को बढ़ावा दिया था। केवल चार व्यावसायिक वर्ग — बागानकर्मी तथा किसान, मिस्तरी तथा मजदूर . "असली जनता" थे जो "देश की अस्थियां और स्नायु" थे। जिन लोगों की गतिविधियां प्रमुख रूप से पदोन्नति संबंधी, वित्तीय अथवा वाणिज्यिक थी उन्हें असली जनता की परिभाषा से अलग रखा गया। यह विभाजन आर्थिक न होकर व्यावसायिक वर्गों के बीच नैतिक अंतर पर आधारित था। यह ईमानदारी से मजदूरी तथा सामान के उत्पादन में लगे व्यक्तियों और उन व्यक्तियों के बीच का अंतर था जो पैसों की हेरा फेरी में लग कर सट्टे के एकाधिकार या विशेषाधिकार के माध्यम से पैसा बनाने की चेष्टा कर रहे थे। बैंक के साथ युद्ध में जूझ कर ही जैक्सनी लोकतंत्र ने अपना विशिष्ट चरित्र तथा आकर्षण अर्जित किया।

मेयर्स की राय में जैक्सनी लोकतंत्र का प्रयास था कि बैंक पार्टी ने जो भ्रष्ट बैंकिंग तथा कागजी मुद्रा प्रणाली बनाई थी उसे ध्वस्त कर दिया जाए। धातु मुद्रा को वापस लाकर जैक्सन के अनुयायी उस प्राचीन गणतांत्रिक व्यवस्था को वापस लाने की कोशिश कर रहे थे जिसका आधार था संविधान की कठोर संरचना, आर्थिक मुद्दों का राजनीतिक सत्ता से अलगाव तथा अपने नागरिकों के समान अधिकारों का समर्थन करने वाली सरकार। जैक्सन का प्रयास बैंक को उखाड़ फेंकने का था उसका उद्देश्य एक विशाल तथा हस्तक्षेप करने वाली सरकार बनाने से बचने के लिए बैंक की शक्ति को किसी केंद्रीय एजेंसी को हस्तांतरित करना नहीं था।

हालांकि जैक्सन के अनुयायियों को बैंक के एकाधिकार को समाप्त करने में सफलता मिल गई थी और उन्होंने 1838 के अत्यंत महत्वपूर्ण बैंकिंग कानून तथा निर्माण में सामान्य निगमन की छूट देने वाले कानूनों के सहारे राज्य तथा निगम को अलग करने का प्रयास किया था, फिर भी प्राचीन गणतंत्रवादी मूल्यों पर लौटने में उन्हें कठिनाई हुई। पूर्व गणतंत्रवादी कुलीनतंत्र तथा उत्तर गणतंत्रवादी सटोरिया पूंजीवाद के विरूद्ध जैक्सन की लड़ाई का उद्देश्य गणतंत्रवादी परंपरा को मजबूत करना था। जैसी कि टॉकवील ने जैक्सनवादी अमरीकियों के बारे में टिप्पणी की है : "वे बदलाव तो पसंद करते हैं, किंतु वे क्रांतियों से डरते हैं।" उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दौर में जैक्सन और जेफरसन के विचारों को एकाधिकारों, बैंक तथा स्वर्ण मानक (गोल्ड स्टैंडर्ड) के आलोचकों ने फिर से सक्रिय किया और गणतंत्रवाद तथा लोकतंत्र की महान परंपरा की ओर लौटने का आह्वान किया।

बोध प्रश्न 4

1) दासता को अमरीकी संविधान में मान्यता क्यों मिली? 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

2) जैक्सन ने बैंक के मुद्दे को हल करने की किस प्रकार कोशिश की ? 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

3.7 सारांश

क्रांति पूर्व के अमरीका में एक मजबूत लोकतांत्रिक परंपरा का विकास हुआ, जिसका आधार सामंतवाद का न होना था। पश्चिम की ओर पलायन करके भूमि प्राप्त करने की संभावना तथा अमरीकी समाज में कुलीनतंत्र की अपेक्षाकृत कमजोर स्थिति ने अमरीका में लोकतांत्रिक राजनीति के उभरने पर जोरदार प्रभाव छोड़ा। उदारवादी अधिकारों के प्रति अमरीकियों की चिंता ने ब्रिटिश शाही हठधर्मिता के खिलाफ उन्हें मुखर कर दिया। अमरीकी क्रांति ने न केवल शाही तंत्र को चुनौती दी, अपितु राजतंत्रीय समाज तथा कुलीनतंत्रीय विशेषाधिकार पर भी जोरदार प्रहार किया। क्रांति के बाद एक संविधान का निर्माण हुआ, जिसका लक्ष्य स्वतंत्रता, लोकतंत्र तथा अमरीकी उपनिवेश को संरक्षण देना था। दासता की संस्था तथा अमरीकी गुटीय संघर्ष और लोकतंत्र के साथ उसके संबंध को भी समझाया गया है। अंत में हमने जैकसनी लोक तंत्र की विशेषताओं की तथा इस तथ्य की चर्चा की है कि जैक्सनी संघर्ष ने किस प्रकार अमरीका में गणतंत्रवादी परंपरा को मजबूत करने का इरादा बनाया।

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) सामंतवाद का न होना, किसी अनम्य वर्ग सीमा का न होना, उच्च वर्ग में जाने की संभावना, आदि। देखिए भाग 3.2।

2) अमरीकी समाज में समृद्धि, विशाल भूमियों की उपलब्धता, अमरीकी समाज में समानता का होना आदि।

बोध प्रश्न 2

1) ब्रिटिश सरकार की अपनाई व्यापारिक नीति, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के कारण आर्थिक कठिनाई की स्थिति आदि। देखिए भाग 3.3।

2) देखिए उप-भाग 3.3.3।

बोध प्रश्न 3

1) देखिए भाग 3.4।

2) देखिए भाग 3.5।

बोध प्रश्न 4

1) दासों को संपत्ति समझा जाता था, अमरीकियों का एक बड़ा वर्ग एकता के लिए दासता की प्रथा का जारी रहना आवश्यक मानता था आदि।

2) देखिए भाग 3.6।

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

ई.जे. हॉब्सबॉम : **दि एज ऑव रिवोल्यूशन,** *1789-1848*

जॉन कैनन (संपा.) : **दि ऑक्सफर्ड कम्पेनियन टु ब्रिटिश हिस्ट्री**

मेयर एगनल : **ए माइटी इम्पायर, दि ओरिजिन्स ऑव दि अमेरिकन रिवोल्यूशन**

रिचर्ड बीमन : स्टीफन बोटीन एवं एडवर्ड सी. कार्टर *द्वितीय (संपा.)* : **बियांड कन्फेडरेशन, ओरिजिन्स ऑफ दि कांस्टीट्यूशन एंड अमेरिकन नेशनल आइडेंटिटी।**